

# वाराणसी के पावन पथ

उत्तर प्रदेश

अद्भुत विरासत-अनूठे अनुभव

उत्तर प्रदेश पर्यटन

अष्ट भैरव

## रुरु भैरव



कोऑर्डिनेट: 25.29790, 83.00736

लैण्डमार्क : हनुमान घाट जुना अखाड़ा  
प्रांगण में।

पुजारी: श्री ग्वालापुरी, मो  
9838820400

काशीखण्ड में इनकी स्थिति हनुमान घाट पर गोमठ की  
दीवार में बाहर की ओर बताई गई है। सामान्य जनमानस  
में इन्हें आनन्द भैरव के नाम से भी जाना जाता है।

## चण्ड भैरव



**कोआर्डिनेट:** 25.28867,82.99922

**लैण्डमार्क :** कुष्माण्डा दुर्गा मन्दिर,  
परिसर मे काली माता की मूर्ति के  
बगल मे।

**पुजारी:** पं० संजय दूबे  
मो० 9616745744

काशीखण्ड मे इनका स्थान दुर्गाकुण्ड मे दुर्गा मन्दिर (कुष्माण्डा दुर्गा)  
परिसर मे बताया गया है।



## असितांग भैरव

**कोआर्डिनेट:**25.32266, 83.01507  
**लैण्डमार्क :**महामृत्युंजय मन्दिर  
परिसर मे(वृद्ध काल के घरे मे)  
**पुजारी:** पं० सोमनाथ दीक्षीत  
**मो०:**9415359669

इनका प्राचीन स्थान अंतकेश्वर के उत्तर मे था। परन्तु वर्तमान मे  
वृद्धकाल के मंदिर (महामृत्युंजय मंदिर परिसर) मे इनकी अवस्थापना  
हैं।



## कोधन भैरव

कोआर्डिनेट:25.30315,82.99251

लैण्डमार्क :कमच्छा देवी मन्दिर  
परिसर में।

पुजारी: पं० देवेन्द्र पुरी  
मो०:9559189678

काशीखण्ड में इनका स्थान कामाक्षा देवी के मंदिर में बताया गया है। वर्तमान मे रथयात्रा से कमच्छा मार्ग पर 500 मीटर जाने पर दाहिने हांथ बटुक भैरव की गली में कमच्छा देवी मन्दिर परिसर में स्थित है। सामान्य जनमानस में इन्हें आदि भैरव के नाम से भी जाना जाता है।



## कपाली भैरव

कोआर्डिनेट:25.33303,83.02426

लैण्डमार्क : लाट भैरव मन्दिर, (लाट पर मस्जिद परिसर में) कज्जाकपुरा ।

पुजारी: पं० हरिहर त्रिपाठी मो०:

इनका प्राचीन स्थान वासुकिकुण्ड के वायव्य कोण में था। वासुकिकुण्ड कर्कोटवापी के समीप में था, एसा त्रिस्थली सेतु में कहा गया है। इस स्थान को भैरव क्षेत्र कहते थे और यहां साधकों को शीघ्र ही सिद्धी मिलती थी। वर्तमान में लाट भैरव में ही कपाल भैरव को प्रतिष्ठित कर उनका पूजन होता है। जो कज्जाकपुरा रेलवे कासिंग से सारनाथ को जाने वाले मार्ग पर 200 मीटर पर स्थित है। इस स्थान को पुराणों में भैरवी यातना का स्थान माना गया है और भैरव का सानिध्य वहां पर भासक के रूप में सदा ही रहा है। लाट भैरव के तालाब को तभी से कपाल मोचन मान लिया गया है।



## संहार भैरव

**कोआर्डिनेट: 25.31905,83.02243**

**लैण्डमार्क :** ए-1 / 82 पाटन दरवाजा  
गायघाट ,वाराणसी ।

**भवन स्वामी:** श्री राकेश मेहरोत्रा मो0  
9794862091

इनका प्राचीन स्थान खर्वविनायक के पूर्व में था। खर्वविनायक का स्थान आदिकेशव के समीप था और आज भी वहीं माना जाता है। यह माना जाता है कि वहीं पर संहार भैरव की मूर्ति भी थी। यह पीठ शंकर के उन अड़सठ पीठों में से है। जो समस्त भारत से काशी में आकर स्थापित हुए। वर्तमान में बिरला अस्पताल के सामने नरेन्द्र देव मार्ग पा पाटन दरवाजे के समीप इनकी मूर्ति है।

## उन्मत्त भैरव

कोआर्डिनेट:25.24937,82.89438

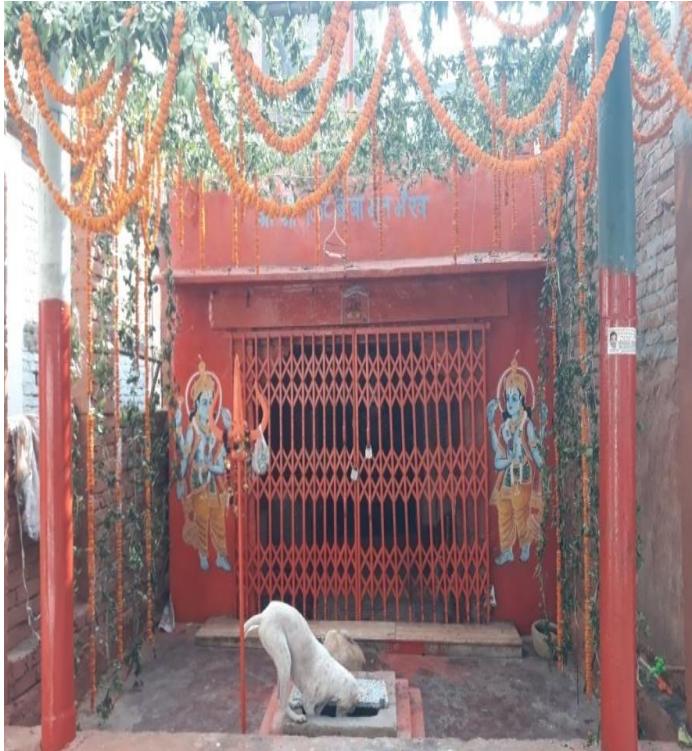
लैण्डमार्क : देउरा काशीपुरा ग्राम में।

पुजारी:



काशीखण्ड में इनका स्थान पंचकोशी मार्ग पर भीमचण्डी के समीप बताया गया है। वर्तमान मे पंचकोशी प्रथम पड़ाव, कंदवा से 9 कि0मी0 दूर द्वितीय पड़ाव भीमचण्डी से पहले देउरा काशीपुरा ग्राम में स्थित है।

## भीषण भैरव



कोआर्डिनेट: 25.031752,83.01075

लैण्डमार्क : भूत भैरव मन्दिर, नक्खास।

पुजारी: श्रीराम महाराज  
मो0 9889724793

काशीखण्ड में अविमुक्त क्षेत्र की रक्षा करने वाले गणों में भीषण भैरव का नाम आया हैं। भीषण भैरव का स्थान वर्तमान में लोहटिया से कर्णघंटा मार्ग 300 मीटर चलने पर नक्खास मुहल्ले में भूतभैरव मंदिर में स्थित है।

नौ गारी



## मुखनिर्मलिका गौरी

कोआर्डिनेट: 25.31831,83.02213

लैण्डमार्क : गायघाट ,वाराणसी ।

पुजारी: पं विवेक महाजन

मो0: 7376848083

काशी खण्ड में मुखनिर्मलिका गौरी का स्थान गाय घाट पर हनुमान मंदिर में बताया गया है। काशी में वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के क्रम में पहले दिन मुखनिर्मलिका गौरी के पूजन की मान्यता हैं।



## ज्येष्ठा गौरी

कोआर्डिनेट: 25.317472,83.01077

लैण्डमार्क : नक्खास, भूत भैरव  
वाराणसी।

पुजारी: पं० शीतला प्रसाद दूबे  
मो०: 9454953668

काशीखण्ड में ज्येष्ठा गौरी का स्थान भूतभैरव मोहल्ले में बताया गया है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के कम में दूसरे दिन ज्येष्ठा गौरी के पूजन की मान्यता है। ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी को इनकी विशेष यात्रा होती है।



## सौभाग्य गौरी

कोऑर्डिनेट: 25.31185,83.01029

लैण्डमार्क : चौक फूलमण्डी के  
बगल में आदिविश्वेश्वर मंदिर के  
अंदर।

पुजारी: पं० सिद्धार्थ दूबे  
मो०:9839143475

काशीखण्ड में सौभाग्य गौरी का स्थान आदि विश्वेश्वर मंदिर परिसर में  
बताया गया है। वासांतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के क्रम में  
तीसरे दिन सौभाग्य गौरी के पूजन की मान्यता है।

# श्रृंगार गौरी

कोआर्डिनेट: 25.31160,83.01040

लैण्डमार्क : अन्नपूर्णा मंदिर के  
निकट, ज्ञानवापी

पुजारी: पं० सूर्यलाल व्यास जी  
मो०: 8081066486

काशीखण्ड में श्रृंगार गौरी का स्थान श्री काशी विश्वनाथ के मंदिर में  
ईशान कोण में जो देवी की मूर्ति है वही वर्तमान काल में श्रृंगार पीठ माना  
जाता है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के क्रम में चौथे  
दिन श्रृंगार गौरी के पूजन की मान्यता है।



## विशालाक्षी गौरी

**कोआर्डिनेट:** 25.31031,83.01029

**लैण्डमार्क :** डी /85 मीरघाट सरस्वती फाटक से अन्दर दाहिनी तरफ अन्दर गली में ।

**पुजारी:** पं० राजनाथ तिवारी जी  
**मो०:**9918200582

काशीखण्ड में विशालाक्षी गौरी का स्थान मीरघाट इलाके में धर्मकूप इलाके में बताया गया है। यह वाराणसी के प्रसिद्ध देवी पीठों में से एक है। विशाल नेत्रों वाली भगवती माँ विशालाक्षी का यह स्थल सती के 51 भावितपीठों में से एक है। कांची की कामाक्षी, मदुरई की मीनाक्षी की ही भांति इनका भी महत्व है। यहां भगवान विश्वनाथ विश्राम करते हैं और सांसारिक कष्टों से खिञ्च मनुष्यों को विश्रान्ति देते हैं। भाद्रपद कृष्ण तृतीया को इनकी वार्षिक यात्रा होती है। देवी भागवत में काशी में केवल इसी देवीपीठ का उल्लेख है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के क्रम में पाचवें दिन विशालाक्षी गौरी के पूजन की मान्यता है।



## ललिता गौरी

कोआर्डिनेट: 25.30975,83.01319

लैण्डमार्क :ललिता घाट

पुजारी: पं० राजन गुरु

मो०: 9838543708

काशीखण्ड में ललिता गौरी का स्थान ललिताघाट पर स्थित बताया गया है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के कम में छठे दिन ललिता गौरी के पूजन की मान्यता है।



## भवानी गौरी

कोआर्डिनेट: 25.31160,83.0138

लैण्डमार्क :अन्नपूर्णा मंदिर परिसर मे

पुजारी: पं० रामेश्वर पुरी

मो०: 9451722773

काशीखण्ड में भवानी गौरी का स्थान अन्नपूर्णा मंदिर के निकट राम मंदिर में बताया गया है। काशीखण्ड में कहा गया है कि काशी निवासियों के योगक्षेम की व्यवस्था भवानी ही करती है। वे विश्वेश्वर की पटरानी हैं। इन्हें महागौरी भी कहा जाता है। जिस अधिकार से नौ दुर्गा में इनका स्थान है। पहले इनकी मूर्ति पूर्वाभिमुखी थी और अब उत्तरमुखी हो गई है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन-पूजन के क्रम में सातवें दिन भवानी गौरी के पूजन की मान्यता है।



## मंगला गौरी

**कोआर्डिनेट:** 25.31487,83.01733  
**लैण्डमार्क :** पंचगंगा घाट पर ऊपर  
दाहिनी तरफ गली में  
**पुजारी:** पं० नरेन्द्र पाण्डेय  
**मो०:** 9369145849

काशीखण्ड में इनका स्थान पंचगंगा घाट इलाके में बताया गया है। प्राचीन लिंग पुराण में इनका नाम ललिता बताया गया है। पूर्व में इनके दर्शन—पूजन का जैसा माहात्म्य था वैसा ही वर्तमान में अक्षुण्ण बना हुआ है। इनकी प्रदक्षिणा का फल पृथ्वी की प्रदक्षिणा के बराबर माना जाता है। चैत्र शुक्ल तृतीया को व्रत तथा इनके पूजन का विशेष फल है। उसको मनोरथ तृतीया भी कहा जाता है। वासंतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन—पूजन के क्रम में आठवें दिन मंगला गौरी के पूजन की मान्यता है।



## महालक्ष्मी गौरी

कोआर्डिनेट: 25.31076,83.00055

लैण्डमार्क :लक्ष्मीकुण्ड,सिद्धिगिरीबाग

पुजारी: पं० रामेश्वर पुरी

मो०: 9451722773

काशीखण्ड में इनका स्थान मिसिरपोखरा क्षेत्र में महालक्ष्मी मंदिर में बताया गया है। वही लक्ष्मीकुण्ड भी है और महालक्ष्मीश्वर शिव का मंदिर भी है, जो अब सोरहियानाथ महादेव कहे जाते हैं। वासांतिक नवरात्र में नौ गौरी के दर्शन-पूजन के क्रम में नवें दिन महालक्ष्मी गौरी के पूजन की मान्यता है। महालक्ष्मी गौरी की वार्षिक यात्रा भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से प्रारम्भ होकर अश्विन कृष्ण अष्टमी तक 16 दिनों की होती है। इन दिनों वहां बड़ा मेला लगता है, जो 16 दिनों का होने के कारण सोलहिया मेला कहलाता है। ऐसा माना जाता है कि यात्रा से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

ନୀତି



# शैलपुत्री

**कोआर्डिनेट:** 25.33966,83.01954

**लैण्डमार्क :** कज्जाकपुरा रेलवे क्रासिंग से सारनाथ मार्ग पर 1 किमी 0 जाने पर पुराने पुल से 10 मी 0 पहले बाएं तरफ अन्दर गली में अलईपुर।

**पुजारी:** पं 0 जिऊत तिवारी

मो 09389128717

शैलपुत्री दुर्गा दुर्गा के नौ रूपों में प्रथम स्वरूप शैलपुत्री का माना गया है। हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लेने के कारण ये शैलपुत्री कही जाती है। काशीखण्ड में इनका स्थान मटिया घाट बताया गया है। वर्तमान में अलईपुर में इनका मंदिर स्थित है। एक बार जब प्रजापति ने यज्ञ किया तो यज्ञ में सभी देवताओं को निमंत्रित किया, किन्तु भगवान् शिव को नहीं। सती यज्ञ में जाने के लिये आतुर हो उठी परंतु शिव जी ने बिना निमंत्रण यज्ञ में जाने से मना किया। सती के प्रबल आग्रह पर उन्होंने देवी को यज्ञ में जाने दिया। वहां जाने पर हुए अपने अपमान से दुखी होकर उन्होंने स्वयं को यज्ञाग्नि में भर्म कर लिया जिससे क्रोधित होकर शिव जी ने यज्ञ का विध्वंस कर दिया। वही सती अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्मी व शैलपुत्री कहलायी।



## ब्रह्मचारिणी दुर्गा

कोआर्डिनेट: 25.31591,83.01788

लैण्डमार्क :काल भैरव मंदिर के पीछे  
सब्जी मंडी से दाहिनी तरफ गली में

पुजारी: पं० राजेश सागरकर

मो०: 8795115213

काशीखण्ड में इनका स्थान दुर्गाघाट पर बताया गया है। ब्रह्म का अर्थ है—तप और चारिणी का अर्थ है—आचरण करने वाली। इस प्रकार ब्रह्मचारिणी से तात्पर्य है तप का आचरण करने वाली देवी। भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिये अनेकों वर्षों तक कठिन तप किया था, जिसके कारण यह तप चारिणी अर्थात् ब्रह्मचारिणी कहलायो। इन्हें दुर्गा के द्वितीय स्वरूप के रूप में मान्यता प्राप्त है। दुर्गा का यह स्वरूप भक्तों व सिद्धों को अनंत फल प्रदान करने वाला है।



## चन्द्रघण्टा दुर्गा

कोआर्डिनेट: 25.31376,83.01154

लैण्डमार्क : चौक स्थित चित्रघण्टा गली में

पुजारी: पं० धमेन्द्र योगेश्वर

मो०: 9455215795

दुर्गा के इस तृतीय स्वरूप का स्थान काशीखण्ड मे चौक के पास चित्रघंटा गली में बताया गया है। लिंगपुराण में इनका उल्लेख नवचण्डी के रूप में भी प्राप्त होता है— **चित्रघंटा च मध्यतः।** अर्थात् मध्य में चित्रघंटा वाराणसी क्षेत्र की रक्षा करती है। देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र सुशोभित है, इसलिय इन्हें चंद्रघण्टा कहा गया। शास्त्रों के अनुसार देवी का ध्यान इहलोक व परलोक दोनों के लिय सदगति प्रदान करने वाला है।



## कुष्माण्डा दुर्गा

कोआर्डिनेट: 25.28875,82.99939

लैण्डमार्क : दुर्गाकुण्ड

पुजारी: पं० मोहन दूबे

मो०: 9616745744

काशीखण्ड में इनकी पहचान दुर्गाकुण्ड की बड़ी दुर्गा जी से की गयो है। अपनी मंद एवं हल्की हँसी के द्वारा अण्ड या बंह्माड की उत्पत्ति करने के कारण देवी कुष्माण्डा कही गयो, इसीलिय इन्हे सृष्टि का आदिस्वरूप भी कहते है। इनके इस स्वरूप दर्शन का महात्म्य बताते हुए कहा गया है कि इनके स्वरूप के दर्शन से रोग व शोक का नाश होता है, तथा आय, यश और बल की वृद्धि होती है।



# स्कन्द माता दुर्गा

कोआर्डिनेट: 25.32716,83.01260

लैण्डमार्क : J-6 / 34 ,जैतपुरा

पुजारी: पं० वागेश्वरी

मो०: 9125814090

दुर्गा के पांचवें स्वरूप स्कन्दमाता का स्थान काशीखण्ड में वागीश्वरी देवी के मंदिर में जैतपुरा क्षेत्र में बताया गया है। स्कन्द कार्तिकेय की माता होने के कारण इन्हे स्कन्दमाता कहा गया है। इनके विग्रह में कुमार कार्तिकेय बालरूप में इनकी गोद में विराजमान है। शास्त्रों में इनके माहात्म्य की चर्चा करते हुए बताया गया है कि इनकी उपासना से सम्पूर्ण इच्छाएं पूर्ण होती हैं तथा मोक्षमार्ग सुलभ ही प्राप्त किया जा सकता है।



## कात्यायनी दुर्गा

**कोआर्डिनेट:** 25.31244,83.01508  
**लैण्डमार्क :** संकठा घाट स्थित आत्मा  
विरेश्वर के मंदिर में  
**पुजारी:** पं० मनोज  
**मो०:** 9628418828

दुर्गा के छठवें स्वरूप को काशी में संकठा घाट पर स्थित आत्माविरेश्वर मंदिर में बताया गया है। कात्य गोत्र के महर्षि कात्यायन ने भगवती पारम्बा की कठिन तपस्या पुत्री प्राप्ति की इच्छा से की। भगवती ने उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लिया तथा वही कात्यायनी कहलायो।



# कालरात्रि दुर्गा

कोऑर्डिनेट: 25.31025,83.01084

लैण्डमार्क : सरस्वती फाटक से अन्दर  
कालिका गली में

पुजारी: पं० सुरेन्द्र तिवारी  
मो०: 7007613890

काशी खण्ड में इनका स्थान कालिका गली बताया गया है। यह दुर्गा के सातवें स्वरूप के रूप में जानी जाती है। इनक स्वरूप और प्रभाव का आभास इनके नाम से ही प्राप्त हो जाता है, अर्थात् यह अंधकारमय स्थितियों का नाश करने वाली तथा काल से रक्षा करने वाली देवी है, तथा यह स्वयं भी कृष्ण वर्ण की है। इनक दर्शन—पूजन से ग्रह आदि की बाधाएँ दूर हो जाती हैं। तमाम आसुरी शक्तियां भयभीत होकर दूर भाग जाती हैं। इनकी उपासना करने से ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।



# महागौरी दुर्गा

कोआर्डिनेट: 25.310918,83.010776

लैण्डमार्क : अन्नपूर्णा मंदिर

पुजारी: पं० रामेश्वर पुरी

मो०: 9451722773

काशीखण्ड के अनुसार प्राचीन विश्वनाथ मंदिर में स्थित अन्नपूर्णा को ही महागौरी कहा गया है। पति रूप में शिव को प्राप्त करने के लिए इन्होंने कठोर तपस्या की थी, जिसके प्रभाव से इनका सम्पूर्ण शरीर काला पड़ गया, परन्तु इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् शिव ने इनके शरीर को गंगा जल से पवित्र कर कान्तिमय बना दिया और इनका रूप गौरवर्णी हो गया, जिससे ये महागौरी कहलाई। इनके दर्शन का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि इनके दर्शन—पूजन आदि से पूर्व संचित पाप नश्ट हो जात है तथा अलौकिक सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

# सिद्धिदात्री दुर्गा

कोआर्डिनेट :25.31662,83.01377

लैण्डमार्क: k-60 / 29, सिद्धमाता गली,  
गोलघर

पुजारी: पं० बच्चा लाल मिश्रा

मो०: 9918993300

काशीखण्ड में इनका स्थान सिद्धमाता की गली (बुलानाला) बताया गया है। ये सभी प्रकार की सिद्धियां प्रदान करने वाली देवी हैं। सम्भवतः इसी लिए इन्हें सिद्धिदात्री कहा गया है। हिमाचल के नन्दा पर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ है। भगवान शिव ने भी इस देवी कृपा से सिद्धियां प्राप्त की थीं। इनकी कृपा से ही शिव का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण शिव अद्वनारीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। इस देवी की पूजा नौवें दिन की जाती है। यह देवी सर्वसिद्धियां प्रदान करने वाली है। उपासक पर इनकी कृपा से कठिन से कठिन कार्य चुटकी में सम्भव हो जाते हैं। इनकी साधना से लौकिक और पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति होती है।

द्वादश

ज्योतिलिंग

# सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग



**कोआर्डिनेट :** 25.30823,83.01102  
**लैण्डमार्क:** रश्मि गेर्स्ट हाउस के सामने मान मन्दिर घाट पर  
**भवन स्वामी:** श्री गुड्डू तिवारी  
**मो०:** 9839357426

गुजरात में स्थित सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जो गुजरात में काठियावाड़ के प्रभास क्षेत्र में स्थित है। वाराणसी स्थित सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी स्थित सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग मान मंदिर घाट के समीप स्थित है।

शिव पुराण में सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति के संबंध में यह कथा वर्णित है कि प्रजापति दक्ष के द्वारा चन्द्रमा को दिए गए क्षय रोग के श्राप से मुक्त होने के लिए छः माह निरन्तर प्रभास नामक स्थान पर शिव की तपस्या की गयी तथा दस करोड़ महामृत्युजय मंत्र का जप किया गया, जिससे प्रसन्न होकर उस क्षेत्र के माहात्म्य को बढ़ाने तथा चन्द्रमा के यथा का विस्तार करने के लिये भगवान् शिव उन्हीं के नाम पर वहाँ सोमेश्वर कहलाय।

इस ज्योतिर्लिंग के महात्म्य के संबंध में शिवपुराण में दिय गय मत के अनुसार सोमेश्वर का पूजन करने से उपासक के क्षय रोग तथा कोढ़ आदि का नाश हो जाता है तथा मनु'य जिस काम के उददेश्य से इस उत्तम तीर्थ का सेवन करता है, उस फल को सर्वथा प्राप्त कर लेता है।



# मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

कोऑर्डिनेट : 25.30828,82.98779

लैण्डमार्क: होटल पूर्विका के सामने  
शीतला मन्दिर के बगल में।

भवन स्वामी / पुजारी: श्री रमेश मिश्रा  
मो: 9452346747

आन्ध्रप्रदेश स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है, जिसका स्थान शिवपुराण के अनुसार श्री शैल पर्वत है जो मद्रास के कृष्ण नगर जिले में कृष्णा नदी के तट पर है। इसे दक्षिण का कैलाश भी कहते हैं। वाराणसी में स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशीखण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग त्रिपुरांतकेश्वर  $\frac{1}{4}$  सिगरा क्षेत्र में टीले पर  $\frac{1}{2}$  स्थित है।

शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग के विवर में वर्णित कथा के अनुसार, जब पूरी पृथ्वी की परिक्रमा कर कुमार कार्तिकेय कैलाश पर्वत आय और गणेश जी के विवाह की बात सुनकर क्रौंच पर्वत पर चले गय शिव-पार्वती ज्योतिर्लिंग स्वरूप धारणकरके वहाँ प्रतिष्ठित हो गय, पुत्र स्नेह से आतुर वे दोनों आमवस्या व पूर्णमासी के दिन पुत्र को देखने के लिय अवश्य ही वहाँ आते हैं। वही प्रतिष्ठित ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन कहलायो।

मल्लिका का अर्थ पार्वती तथा अर्जुन शब्द शिव का वाचक है।

इस ज्योतिर्लिंग के माहात्म्य के विषय में शिवपुराण में वर्णित है कि जो व्यक्ति इस ज्योतिर्लिंग का दर्शन करता है वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और सम्पूर्ण अभीष्ट प्राप्त कर लेता है।

# महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.32256, 83.01495

लैण्डमार्क: महामृत्युंजय मन्दिर परिसर  
में(वद्ध काल के घरे में)

भवन स्वामी: श्री सोमेनाथ दीक्षीत  
मोबाइल: 9415359669



उज्जैन म0प्र0में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है, जिसका स्थान शिवपुराण के अनुसार मालवा प्रदेश में क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नामक नगरी में विराजमान है, जिसे अवन्तिकापुरी भी कहते हैं। वाराणसी में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशीखण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मैदागिन क्षेत्र के वृद्धकाल के घरे में महामृत्युंजय महादेव मन्दिर परिसर में स्थित है।

शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग के सम्बन्ध में वर्णित कथा के अनुसार प्राचीन अवन्ति नगरी में वेदप्रिय ब्राह्मण के शिवभक्त पुत्रों द्वारा असुर दूषण के आतंक से संपूर्ण पृथ्वी को बचाने के लिये की गयो पार्थिव स्तुति से प्रसन्न हो शिवलिंग के स्थान पर बने गढ़े से शिव अवतरित हुए। शिवभक्तों की इस प्रार्थना पर कि वे जनसाधारण की रक्षा के लिये यहीं रहे, भगवान शिव उस परम सुंदर गढ़े में स्थापित हो गय।

इस ज्योतिर्लिंग के माहात्म्य के विवर में शिवपुराण में वर्णित है कि उनके दर्शन से स्वप्न में भी कोई दुःखः नहीं होता, जिस कामना से भक्त उनका दर्शन करता है उसका मनोरथ पूर्ण हो जाता है और परलोक में मोक्ष प्राप्त हो जाता है।



# ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

**कोआर्डिनेट :** 25.32256, 83.01495  
**लैण्डमार्क:** जलालीपुरा मस्जिद के सामने गली में ऊँचे टीले पर  
**पुजारी:** श्री शिवदत्त पाण्डेय  
**मोबाइल:** 07505673486

मध्य प्रदेश के मान्धाता स्थित ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है, जिसका स्थान शिवपुराण के अनुसार मालवा प्रदेश में नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। वाराणसी में स्थित ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशीखण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर मोहल्ले में स्थित है। शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग के सम्बन्ध में वर्णित कथा के अनुसार महर्षि नारद द्वारा विंध्य पर्वत को यह कहने पर कि उसके शिखर का एक भी भाग देवताओं के लोकों तक नहीं पहुंचा, विंध्य वहां गय जहां साक्षात् ओंकार की स्थिति है। वहां जाकर उन्होंने शिव की पार्थिव बनाकर छह मास तक तपस्या की जिससे प्रसन्न होकर शिव ने उनसे मनवांछित वर मांगने को कहा जिस पर विंध्य ने उनसे सदैव वहां निवास करने को कहा, भगवान् शिव वहां स्थापित हो गय। वहां जो एक ओंकार लिंग था वह दो भागों में विभक्त हो गया और प्रणव में जो शिव थे वे ओंकारनाम से विख्यात हुए और पार्थिव मूर्ति परमेश्वर के नाम से विख्यात हुई।



# वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.30313,82.99037

**लैण्डमार्क:** कमच्छा संकटहरण हनुमान मन्दिर से सी. एच.एस. प्राइमरी स्कूल मार्ग पर 200 मीटर बैजनत्था मुहल्ले में।

**पुजारी:** श्री राम सुवेदी  
मो: 9839434307

झारखण्ड स्थित वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है, जिसका स्थान शिवपुराण के अनुसार यह संथाल परगने में ई० आर० रेलवे जसीडीह स्टेशन के पास वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। पुराणों के अनुसार यही चिता भूमि है। वाराणसी में स्थित वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशीखण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित वैद्यनाथ कमच्छा क्षेत्र में बैजनत्था नाम से प्रसिद्ध है।

शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग के सम्बन्ध में वर्णित कथा कें अनुसार रावण द्वारा हिमालय पर्वत से दक्षिण में जंगलों से भरे हुए वन में भगवान शिव की कठोर तपस्या करने पर भी जब भगवान शिव प्रसन्न नहीं हुए रावण ने अपने नौ शीश काटकर चढ़ा दिय एक शीश शो'। रहने पर सभी मस्तकों को पूर्ववत निरोग करके उसकी इच्छानुसार उत्तम बल प्रदान किया। रावण द्वारा उनको लंका ले जाने के निवेदन पर शिव ने अपनी शिवलिंग प्रदान करते हुए कि लिंग जहां भी पृथ्वी पर रख दिया जायगा, वह वहीं स्थापित हो जायगा। मार्ग में रावण ने मूत्रोत्तर्संग की इच्छा से शिवलिंग एक ग्वाले को प्रदान कर दिया, किंतु ग्वाले द्वारा शिवलिंग का भार वहन न कर पाने के कारण उसने शिवलिंग को पृथ्वी पर रख दिया और वह हीरकमय शिवलिंग वहीं स्थापित हो गया। यही शिवलिंग वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस ज्योतिर्लिंग के माहात्म्य के विषय में शिवपुराण में वर्णित है कि शिवलिंग का दर्शन मात्र सम्पूर्ण अभीष्टों को देने वाला तथा पापराशि को हरने वाला है। सत्पुरुशां को भोग व मोक्ष देने वाला है।

# भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग



**कोआर्डिनेट :** 25.31126,83.01135  
**लैण्डमार्क:** काशी विश्वनाथ गेट नं0—2  
(सरस्वती फाटक) से चौक की तरफ 200  
मीटर  
**पुजारी:** श्री दिनेश शंकर उपाध्याय  
**मो:** 9335359297

महाराष्ट्र में स्थित भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है, जिसका स्थान शिवपुराण के अनुसार यह ज्योतिर्लिंग बम्बई से पूर्व और पूना से उत्तर भी नदी के किनारे उसके उद्गम स्थान सहय पर्वत पर है। शिवपुराण की एक कथा के आधार पर वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग असम के कामरूप जिले में गुवाहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर स्थित है। वाराणसी में स्थित भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक स्वरूप है। काशीखण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित भीमेश्वर काशी करवट मंदिर में है।

शिवपुराण में इस ज्योतिर्लिंग के सम्बन्ध में वर्णित कथा के अनुसार प्रचीन काल में कामरूप में भीम नामक एक राक्षस हुआ, जो कुंभकर्ण व राखसी कर्कटी से उत्पन्न था। श्रीराम द्वारा उसके वंश के समूल नाश की बात अपनी माता से जानकर उसने विणु के संहार हेतु ब्रह्मा की एक हजार वर्ँा तक कठोर तपस्या की तथा ब्रह्मा जी के वरदान का अनुचित लाभ उठाते हुए संपूर्ण कामरूप को आतंकित कर दिया। कामरूप के शिवभक्त राजा सुदक्षिण को एकांत स्थान पर बंद दिया। सुदक्षिणद्वारा उसी एकांत स्थान पर शिव के पार्थिव पूजन की बात जानकर जब उसने वहां पहुंचकर शिवलिंग को न'ट करने हेतु लिंग पर प्रहार करना चाहा तभी शिव प्रकट हो गय और कहा कि मैं भीमेश्वर अपने भक्त की रक्षा के लिय प्रकट हुआ हूँ और उन्होने सारे राक्षसों को भस्म कर डाला तथा देवताओं के अनुरोध पर भक्तों को सदैव सुख प्रदान करने के लिय वर्ही स्थित हो गय। इस ज्योतिर्लिंग के माहात्म्य के विषय में शिवपुराण में वर्णित है कि शिवलिंग सदा पूजनीय तथा समस्त विपत्तियों का निवारण करने वाला होगा।

# रामेश्वर ज्योतिर्लिंग



**कोआर्डिनेट :** 25.30826,83.01109

**लैण्डमार्क:** रश्मि गेस्ट हाउस के सामने  
डालिफन रेस्टोरेन्ट के पीछे

**भवन स्वामी:** श्री गुड्डू तिवारी  
**मोबाइल:** 9839357426

तमिलनाडु स्थित रामेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जिसका स्थान शिव पुराण में कन्याकुमारी में बताया गया है। यहाँ समुद्र के तट पर रामेश्वर का विशाल मंदिर है। रामेश्वर को सेतु बंध भी कहते हैं। वाराणसी स्थित रामेश्वर ज्योतिर्लिंग इसी का प्रतीक है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी के मान मंदिर मोहल्ले में इसका प्रतीक स्वरूप स्थान है। शिव पुराण में इसके संबंध में वर्णित कथा इस प्रकार हैः— भगवान विश्वनाथ के अवतार राम के समय में जब रावण सीता जी के हरण के बाद लंका पर आक्रमण करने हेतु समुद्र तट पर सेना सहित पहुँचे तो उन्हें प्यास की अनुभूति हुई और उन्होंने जल ग्रहण करने से पूर्व शिव जी की पार्थिव प्रतिमा का पूजन किया, जिसे प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उनसे वर मांगने को कहा। इस पर श्री राम ने भगवान शिव से विजयी होने का वरदान मांगा तथा कहा कि यदि आप संतुष्ट हैं तो जगत को पवित्र करने तथा दूसरों की भलाई करने के लिए सदा यहाँ निवास करें। श्री राम के एसा कहने पर भगवान शिव वहाँ ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गये तथा तीनों लोकों में रामेश्वर के नाम से उनकी प्रसिद्धि हुई।

शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि भगवान रामेश्वर सदा भोग व मोक्ष देने वाले तथा भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाले हैं, जो दिव्य गंगा जल से रामेश्वर शिव को भक्तिपूर्वक स्नान कराता है वह जीवन मुक्त हो जाता है।



# नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.32268,83.01499

लैण्डमार्क: महामृत्युंजय मन्दिर परिसर  
में(वद्ध काल के घरे में)

भवन स्वामी: श्री सोमेनाथ दीक्षीत  
मोबाइल: 9415359669

गुजरात में स्थित नागेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से एक है। इसका स्थान शिव पुराण के अनुसार द्वारका से ईशान कोण में 12–13 मील दूर बताया गया है। दारुका वन इसी का नाम है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी के मैदागिन क्षेत्र में मृत्युंजय महादेव मंदिर परिसर में प्रतीक स्वरूप स्थित है। शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग के संबंध में वर्णित कथा इस प्रकार है—प्राचीन समय में दारुका नामक राक्षसी का पति दारुक बलवान राक्षस था। पश्चिम समुद्र पर स्थित दारुक वन की देखरेख पार्वती ने अपनी भक्त दारुका को दिया था। इसी वन में रहकर दारुक सभी प्राणियों को आतंकित करता था। इससे पीड़ित प्रजा ने महर्षि और्व को अपनी व्यथा सुनाई, जिससे दुखी होकर उन्होंने राक्षसों को श्राप दे दिया कि राक्षस यदि प्राणियों के प्रति हिंसा व यज्ञ विध्वंस करेंगे तो अपने प्राणों से हाथ धो बैठेंगे। इस समय पार्वती के वरदान का लाभ उठाकर दारुका समस्त वन को लेकर समुद्र में जा बसी और राक्षसगण वही से प्राणियों को पीड़ा देने लगे। एक बार समुद्र मार्ग से आ रही नाव में बैठे व्यक्तियों को राक्षसों ने बंदी बना लिया इनमें एक सुप्रिय नामक वैश्य शिव भक्त था, जिसने शिव से अपनी रक्षा की याचना की। इनकी प्रार्थना सुनकर शिव नाव के विवर से निकल पड़े। उनके साथ एक मंदिर भी प्रकट हुआ, जिसमें एक ज्योतिर्लिंग प्रकाशित हो रहा था।

शिव ने सभी राक्षसों का संहार किया तब दारुका ने पार्वती से अपने कुल की रक्षा हेतु प्रार्थना की, जिस पर भगवान शिव ने कहा कि भक्तों की रक्षा करने के लिए मैं इसी वन में निवास करूँगा। इस प्रकार शिव और पार्वती स्वयं वही स्थित हो गए। ज्योति स्वरूप महादेव नागेश्वर और पार्वती नागेश्वरी कहलायो। शिव पुराण में इसका माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि यह शिवलिंग तीनों लोकों की कामना पूर्ण करने वाला है।

# विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट :25.3107744,83.0104514

लैण्डमार्क:काशी विश्वनाथ मन्दिर

पुजारी: श्री अशोक द्विवेदी

मो0 :9415221558,09811836122



शिव पुराण एवं काशी खण्ड में इनका स्थान काशी बताया गया है। शिव पुराण में वर्णित कथा के अनुसार— एक बार भगवान शिव के मन में एक से दो होने की इच्छा हुई और इन्होंने अपने दो स्वरूप शिव और शक्ति निर्मित किए। शिव और शक्ति ने अदश्य रहकर दो चेतन (प्रकृति व पुरुष) की सृष्टि की। उस निर्गुण परमात्मा से आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों को तपस्या करनी चाहिए, जिससे उत्तम सृष्टि का विस्तार होगा। प्रकृति व पुरुष के द्वारा तपस्या के लिए उपयक्त स्थान की इच्छा करने पर भगवान शिव ने पौच कोस लम्बे शुभ एवं सुन्दर नगर का निर्माण किया, जो उनका अपना ही स्वरूप था। तब पुरुष (श्रीहरि) ने सृष्टि की कामना से वर्षों तक तप किया। उनके तप से उत्पन्न श्वेत जलराशि में पंचकोशी डूबने लगी, यह देखकर भगवान शिव ने उसे अपने त्रिशूल पर धारण कर लिया। श्रीहरि के नाभि से उत्पन्न कमल नाल से ब्रह्मा प्रकट हुए तथा शिव की आङ्गा से सृष्टि आरम्भ की। भगवान शिव ने सोचा कि ब्रह्माण्ड के भीतर के प्राणी मुझे कैसे प्राप्त करेंगे ऐसा सोचकर उन्होंने पंचकोशी को इस जगत में ही छोड़ दिया और कहा कि पंचकोशी मुझे परम प्रिय है। अतः स्वय भगवान शिव ने यहों अविमुक्त लिंग की स्थापना की। अविमुक्त (विश्वनाथ) के काशी में निवास करने की प्रार्थना कर भगवान शिव यही विराजमान हो गए।

शिव पुराण में ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला है। अन्य मोक्षदायक धामों में सारूप्य मुक्ति प्राप्त होती है, केवल काशी में ही सायुज्य नामक सर्वोत्तम मुक्ति सुलभ होती है।

# त्रयंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.31078,83.00713

लैण्डमार्क: के0सी0एम0 सिनेमा से दशाश्वमेध थाने की गली में 10 मीटर दूर

पुजारी: श्रीमती शारदा दीक्षीत  
मो:8795231949



शिव पुराण के अनुसार इस ज्योतिर्लिंग का स्थान महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक पंचवटी से 18 मील दूर गोदावरी के उदगम स्थान ब्रह्म गिरि के निकट गोदावरी के तट पर बताया गया है। वाराणसी में ज्योतिर्लिंग का प्रतीक काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी के बड़ादेव मोहल्ले में पुरुशोत्तम भगवान के मंदिर में इसका स्थान बताया गया है। शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग के विशय में कथा वर्णित है कि पूर्वकाल में गौतम नाम के एक श्रेष्ठ ऋषि हुए, जिनकी पत्नी का नाम अहिल्या था। ब्रह्म गिरि में सौ वर्षों तक भयानक अवर्षण हुआ तब गौतम ऋषि ने छः मास तक तप किया तथा वर्षण देव से वर्षा की प्रार्थना की, जिस पर विधान के विरुद्ध न जाते हुए वर्षण ने ऋषि को अक्षय रहने वाला जल प्रदान किया। इस जल से समस्त ब्रह्म गिरि हरीभरी हो गयी। गौतम ऋषि के आश्रम में बसी ब्राह्मण स्त्रियों से अहिल्या का जल को लेकर विवाद हो गया, जिससे नाराज होकर उन स्त्रियों ने अपने पतियों से गौतम का अनिष्ट करने को उकसाया, जिसके लिए उन्होंने श्री गणेश से प्रार्थना की। ब्राह्मणों की इच्छानुसार गणेश गौरुप धारण कर गौतम ऋषि के खेत में चरने गए, जैसे ही ऋषि मुट्ठी भर तिनका लेकर गौरुप को हांकने गए और तिनके का स्पर्श होते ही गौरुप भूमि पर गिरकर मर गयी। गौरुप हत्या का आरोप लगाकर उन्हें आश्रम से निष्कासित कर दिया गया। वहाँ से वे एक कोस दूर रहने लगे। उनके लिए वैदिक कर्म भी वर्जित कर दिया गया। गौरुप हत्या के पाप से मुक्ति के लिए गौतम ऋषि ने शिव के पार्थिव का पूजन किया, जिससे प्रसन्न होकर शिव जी प्रकट हुए। गौतम ऋषि ने गौरुप हत्या के पाप से मुक्ति की याचना करते हुए शिव जी से गंगा प्रदान करने को कहा, जिस पर गंगा ने कहा कि यदि शिव जी अम्बिका तथा अपने गणों के साथ यहीं रहे तभी वे धरातल पर निवास करेगी। इससे प्रसन्न होकर शिव जी वहाँ स्थापित हो गए। वहाँ की गंगा गौतमी (गोदावरी) नाम से विख्यात हुई और शिव का ज्योर्तिमय लिंग त्रयम्बक कहलाया।



# केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.29956,83.00746

लैण्डमार्क: केदार घाट

पुजारी: श्री कुमार स्वामी (केदार मठ)

मो0 :0542—2454064

उत्तराखण्ड में स्थित केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वादश ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित है। इसका स्थान शिव पुराण के अनुसार हिमालय के केदार नामक शिखर के पश्चिम की ओर मन्दाकिनी के किनारे श्री केदारनाथ विराजमान है। वाराणसी में स्थित केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग का प्रतीक स्वरूप काशी खण्ड के अनुसार केदार घाट पर स्थित है। शिव पुराण में ज्योतिर्लिंग के संबंध में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु के दो अवतार नर और नारायण ने बद्रीका तीर्थ में पार्थिव शिव लिंग बनाकर भगवान शिव की आराधना की, जिससे प्रसन्न होकर शिव जी प्रकट हुए और उनसे वर मांगने को कहा। इस पर नर और नारायण ने कहा कि अपने स्वरूप में पूजा ग्रहण करने के लिए आप यही स्थित हो जाए। उनके इस अनुरोध पर भगवान शिव स्वयं केदार तीर्थ में ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थित हो गएशिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि ज्योतिर्लिंग का दर्शन पूजन करने वाले भक्तों को अभीष्ट वस्तु प्राप्त होती है। उनके इस वलय स्वरूप का दर्शन करके भक्त पाप मुक्त हो जाता है, साथ ही जीवन मुक्त भी। केदारेश्वर शिव के स्वरूप का दर्शन करके मनुष्य मोक्ष का भागी होता है।



# घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

कोआर्डिनेट : 25.30320,82.99241

लैण्डमार्क: कमच्छा देवी मन्दिर परिसर में।

पुजारी: श्री देवेन्द्र पुरी

मो0 9559189678

शिव पुराण में इसका स्थान महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत दौलताबाद स्टेशन से 12 मील दूर बेरुल गांव के पास बताया गया है। इस स्थान को ही शिवालय कहते हैं। वाराणसी में स्थित घृश्णे'वर ज्योतिर्लिंग का प्रतीक स्वरूप काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में इसका स्थान बटुक भैरव के समीप बताया गया है। शिव पुराण में इस ज्योतिर्लिंग के संबंध में वर्णित कथा के अनुसार— देव गिरि के निकट सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहते थे, जिनकी पत्नी का नाम सुदेहा था। सम्पूर्ण वैभव होने के बावजूद भी उनके कोई पुत्र नहीं था, तब ब्राह्मणी ने अपनी बहन घुश्मा का विवाह सुधर्मा से कर दिया। घुश्मा बहन की आज्ञा से रोज सौ पार्थिव शिव लिंग बनाकर पूजन करके तालाब में विसर्जित करती थी, जिसके प्रभाव से उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ, जिसके विवाहोपरान्त पुत्र वधु के घर आने से सुदेहा को और अधिक ईश्या हो गयो। एक दिन उसने रात्रि में सोते हुए पुत्र के टुकड़े—टुकड़े कर के उसी तालाब में डाल दिया जहाँ घुश्मा पार्थिव शिव लिंग विसर्जित करती थी। घुश्मा की पुत्रवधु ने जब उसके विशय में बताया तो घु'मा पूर्व की ही भौति शिव लिंग पूजन करके तालाब में विसर्जित करने गयो तो वहाँ उनका पुत्र व ज्योति स्वरूप शिव खड़े दिखायो दिए। उन्होंने सुदेहा के वध की बात कहीं, जिससे मना करते हुए घुश्मा ने भगवान शिव से लोगों की रक्षा करने के लिए सदा उसी स्थान पर निवास करने का निवेदन किया और कहा कि घु'मा के नाम पर आप घु'मे'वर कहलाय। इस पर भगवान शिव ने कहा कि मैं घुश्मेश्वर कहलाता हुआ सदा यहाँ निवास करूगा तथा मेरा शुभ ज्योतिर्लिंग ज्योतिर्लिंग घुश्मेश नाम से प्रसिद्ध हो। एसा कहकर भगवान शिव वहाँ ज्योतिर्लिंग रूप में स्थित हो गए। शिव पुराण में ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य बताते हुए कहा गया है कि यह सम्पूर्ण कामनाओं का पूरक तथा भोग और मोक्ष प्रदान करने वाला है।

द्वादशा

आदित्य

# द्रौपदादित्य

कोआर्डिनेट :25.3107744,83.0104514

लैण्डमाकःविश्वनाथ मन्दिर के बगल में  
अक्षयवट के नीचे म0नं0 सी0के0 35 / 21  
पुजारीः श्री

इसकी स्थापना द्रौपदी ने की थी और इसी की आराधना से उनको  
अक्षयस्थाली मिली थी, जिसके द्वारा वनवास में पाण्डवों की क्षुधाकष्ट  
से रक्षा हुई थी, इनकी आराधना करने वाले को क्षुधा का कष्ट नहीं  
होता और इनके समीप स्थित द्रौपदी की मूर्ति का दर्शन करने से  
प्रिय जनों का वियोग नहीं होता। इनकी वर्तमान स्थिति विश्वनाथ  
मन्दिर के बगल में अक्षयवट के नीचे म0नं0 सी0के0 35 / 21 में है।

# गंगादित्य

कोआर्डिनेट :25.30959,83.01326  
लैण्डमार्क:ललिता घाट नेपाली मन्दिर के  
नीचे मकान नं0 डी 1/68  
पुजारी: श्री गजानन्द सरस्वती  
मो0 9453219388



इनका स्थान विश्वेश्वर के दक्षिण में कहा गया है, जो कि काशी में गंगा जी के आने के समय से प्रकट हुई थी और गंगा वट पर आज भी विराजमान है। प्राचीन काल में इनका स्थान गंगाकेशव तथा गंगा जी की मूर्ति सहित अगस्त्य के दक्षिण में था, परन्तु वर्तमान में इनका स्थान ललिता घाट नेपाली मन्दिर के नीचे मकान नं0 डी 1/68 में है।



वृद्धादित्य

कोआर्डिनेट :25.30953,83.01177

लैण्डमाक:मीरघाट पर म0नं0 डी 3 / 15

भवन स्वामी: श्री संदीप खन्ना  
मो09984417655

इसकी स्थापना वृद्धहारीत नामक ऋषि द्वारा आराधना करने के पश्चात हुई थी। इनका स्थान विशालाक्षी गौरी के दक्षिण में है। इनकी अर्चना से वार्धक्य का कष्ट नहीं होता अर्थात् वृद्धा अवस्था में होने वाले रोगों तथा कष्टों से रक्षा होती है तथा यथा समय मुक्ति मिलती है। इन्हीं की कृपा से वृद्धहारीत को पुनः योवन मिला था। इनकी मूर्ति आजकल मीरघाट पर म0नं0 डी 3 / 15 में स्थित है।



**लौलाकार्दित्य**  
**कोआर्डिनेट :25.29114,8300574**  
**लैण्डमार्क:लोलार्क कुण्ड**  
**पुजारी: श्री शिवप्रसाद पाण्डेय**  
**मो0:9648049071**

काशी खण्ड के अनुसार आदित्य भगवान का मन काशी के दर्शन में अत्यन्त लोल हो गया, इसी से वहाँ पर सूय का नाम लौलार्क पड़ गया। क्षेत्र के दक्षिण दिशा में असि संगम के समीप ही लौलार्क विराजमान है, उनके द्वारा काशीवासियों का सदा योगक्षेम होता रहता है। अगहन मास के किसी आदित्य वार को सप्तमी अथवा षष्ठी तिथि को लौलार्क की वार्षिक यात्रा करके मनुष्य समस्त पापों से छूट्टी पा जाता है। माघ मास की शुक्ल सप्तमी के दिन गंगा और असि के संगम पर लौलार्क कुण्ड में र्नान करने से मनुष्य अपने सात जन्म के संचित पापों से मुक्त हो जाता है। वर्तमान में यह लौलार्क कुण्ड की सीढ़ी पर नीचे मढ़ी में स्थित है।



## विमलादित्य

कोआर्डिनेट :25.30732,83.00468  
लैण्डमाकः जंगमबाड़ी में खाड़ीकुओँ के  
समीप म0नं0 डी 35 / 273  
भवन स्वामीः श्री जंगमबाड़ी मठ  
मो0:

हरिकेश वन में विमलादित्य का स्थान है। इनकी अर्चना से कुष्ठ रोग का नाश होता है। इसकी वर्तमान स्थिति जंगमबाड़ी मोहल्ले में खाड़ीकुओँ के के समीप म0नं0 डी 35 / 273 में है।



साम्बादित्य

कोआर्डिनेट :25.31201,83.00319

लैण्डमाकः सूयकुण्ड

भवन स्वामीः श्री राजीव गांधी

मो0: 9415269236

काशी खण्ड के अनुसार यह साम्बादित्य मंदिर सूय मंदिर नाम से प्रसिद्ध है। काशी के 'सूरज—कुण्ड' मोहल्ले में साम्बादित्य का मंदिर सूय मंदिर के पास है और कुण्ड भी वही स्थित है। आज से 50—60 वर्ष पूर्व चर्म रोग से मुक्ति पाने के लिए वर्षपयन्त उक्त कुण्ड में लोग स्नान किया करते थे, महारोग से मुक्ति भी पाते थे अर्थात् चर्म रोग नाश के लिए इनकी आराधना का विशेष महत्व है। चैत्र मास के रविवार को इनकी वार्षिक यात्रा होती है। यदि माघशुक्ल सप्तमी रविवार को पड़े तो, वह उनके दर्शन के लिए बड़ी पुनीत मानी जाती है। वर्तमान में इसकी स्थिति सूयकुण्ड प्रसिद्ध म0नं0 डी 51/90 में है।



**उत्तराकादित्य**  
**कोआर्डिनेट :**25.33464,83.01171  
**लैण्डमाक:** बकरियाकुण्ड  
**भवन स्वामी:** श्री गोपाल जी  
**मो:** 8960752072

वाराणसी नगर के उत्तरी सीमा के निकट एक तीर्थ है, जिसका वर्तमान नाम बकरिया कुण्ड है। इसके पुराने नाम उत्तरार्ककुण्ड तथा बर्करीकुण्ड है, यही पर उत्तरार्क का मंदिर था, जो मुसलमानों के अधिपत्य के प्रारम्भ में ही नष्ट हो गया और पुनः उसका निर्माण नहीं हो पाया। इस प्रकार उत्तरार्क की मूर्ति लुप्त है। केवल स्थान की अर्चना होती है। काशी खण्ड के अनुसार पौष मास के रविवार को यहाँ यात्रा का विधान है। वर्तमान में इसकी स्थिति अलईपुर बकरिया कुण्ड पर है।



## केशवादित्य

कोआर्डिनेट :25.32928,83.04285

लैण्डमाकः म0नं0 ए 37 / 51 वरुणा आदि  
केशव मंदिर

भवन स्वामीः श्री ओमप्रकाश त्रिपाठी  
मो:93070102769

भगवान केशव को शिवाराधन करते देखकर सूयनारायण ने उनसे पूछा कि आप जगदात्मा विश्वम्भर होकर भी किसकी अर्चना करते हैं। इस पर भगवान ने उनको सदा शिव की महत्ता का उपदेश दिया और तभी से सूय नारायन शिव भक्त हुए। जिस स्थान पर सूयनारायण को यह ज्ञानोपदेश केशव भगवान से मिला वही पर केशवादित्य की स्थापना हुई। इनकी आराधना से ज्ञान की प्राप्ति होती है। माघ शुक्ला सप्तमी को यदि रविवार पड़े तो इनके दर्शन—पूजन का महात्म्य है। आदिकेशव के मंदिर में वरुणा—संगम पर इनकी मूर्ति है, जिसकी वर्तमान स्थिति वरुणा आदि केशव मंदिर म0नं0 ए 37 / 51 में हैं।



**खण्डोलकादित्य**

**कोआर्डिनेट :** 25.32042, 83.02253

**लैण्डमाक:** म0नं0 डी 2/9 कामेश्वर  
महादेव, मच्छोदरी

**भवन स्वामी:** श्री राजेश गिरि  
मो: 9839703054

इनका दूसरा नाम विनतादित्य भी है, क्योंकि गरुण की माता विनता द्वारा इनकी स्थापना हुई है। इनके दर्शन से सभी पापों तथा रोगों का नाश होता है। त्रिलोचन के समीप कामेश्वर महादेव के पूर्व द्वार पर इनकी वर्तमान मूर्ति है। वर्तमान में इनकी स्थिति मच्छोदरी से पूर्व कामेश्वर के द्वार पर म0नं0 डी 2/9 में है।



**अरुणादित्य**

**कोआर्डिनेट :** 25.31978, 83.02325

**लैण्डमाक:** म0नं0 डी 2/80 त्रिलोचन  
महादेव मच्छोदरी

**भवन स्वामी:** श्रीमती सुशीला देवी  
मो: 9307967228

यह सूय के सारथी अरुण द्वारा स्थापित हुए थे, जिनके प्रभाव में अरुण को सूयनारायण के सारथी होने का गौरव मिला। आदिमहादेव के उत्तर में इनका स्थान कहा गया है और आजकल त्रिलोचन महादेव के मंदिर में पीछे की ओर इनकी मूर्ति है। इनकी अर्चना से व्याधि, शोक, दरिद्रता, कलेश आदि से छुटकारा मिलता है। वर्तमान में इनकी स्थिति त्रिलोचन महादेव की परिक्रमा में म0नं0 डी 2/80 में है।



## मयूखादित्य

कोआर्डिनेट :25.31506,83.01711

लैण्डमाक: म0नं0 24 / 34 में मंगलागौरी  
मन्दिर में खम्भे पर।

भवन स्वामी: श्री नरेन्द्र पाण्डेय  
मो:9369145849

सूयनारायण ने पंचनद के समीप गभस्तीश्वर शिव तथा मंगलागौरी की स्थापना करके उनके समक्ष तप किया और वरदान पाया। उसी स्थान पर मयखादित्य की आराधना होती है। इनकी अर्चना से रोग एवं दरिद्रता से रक्षा होती है। वर्तमान में पंचगंगाघाट के ऊपर मंगलागौरी मन्दिर में खम्भे पर म0नं0 24 / 34 में है।



## यमादित्य

कोआर्डिनेट :25.31221,83.01554

लैण्डमार्क: संकटाघाट के सीढ़ी पर म0नं0 के 7 / 164 में चौतरे पर बाहर।

पुजारी: श्री लाल जी (माली)

मो:9795152131

इनकी स्थापना यमराज द्वारा हुई है। यमेश्वर के पश्चिम तथा वीरेश्वर के पूर्व इनका स्थान है और इनके दर्शन—पूजन से मनुष्य को यमलोक नहीं जाना पड़ता है। वर्तमान में इनकी स्थिति संकटाघाट के सीढ़ी पर म0नं0 के 7 / 164 में चौतरे पर बाहर है।

**काशी के  
चार धाम**



## बद्री नारायण

कोऑर्डिनेट :25.31885,83.02275

लैण्डमार्क: मं0 नं0 ए-1-72 बद्री नारायण  
घाट

पुजारी: श्री द्विरिकानाथ

मो0: 8400831084

आदि शंकराचाय द्वारा भारत के चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की गयो। भारत के उत्तर दिशा में उत्तराखण्ड स्थित नर-नारायण पर्वत श्रृंखला के मध्य श्री बद्रीनाथ धाम अवस्थित है। काशी में बद्रीनाथ का मंदिर बद्री नारायण घाट पर स्थित है। बद्री नारायण घाट के सामने गंगा में नर-नारायण तीर्थ की स्थिति मानी जाती है। एसी मान्यता है कि नर-नारायण तीर्थ में स्नान के पश्चात बद्री नारायण का दर्शन-पूजन से उत्तराखण्ड स्थित बद्रिकाश्रम का फल मिलता है।



## रामेश्वरम

कोऑर्डिनेट :25.29723,83.00672

लैण्डमार्क: श्री दशनाम जूना अखाडा  
प्रांगण मे हनुमानघाट।

पुजारी: श्री ग्वाल पुरी  
मो0: 9838820400

आदि शंकराचाय द्वारा भारत के चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की गयो। भारत के दक्षिण दिशा में तमिलनाडू स्थित रामेश्वरम में भगवान शिव का विशालतम मंदिर समुद्र तट पर अवस्थित है। काशी में रामेश्वरम मंदिर के प्रतीक स्वरूप हनुमान घाट पर भगवान शिव का मंदिर अवस्थित है। यहाँ पर श्रद्धालुओं द्वारा रामेश्वरम मंदिर का दर्शन—पूजन किया जाता है। एसी मान्यता है कि यहाँ दर्शन—पूजन से रामेश्वरम के दर्शन का फल प्राप्त होता है।



## जगन्नाथ

कोआर्डिनेट :25.28632,83.00546

लैण्डमार्क: अस्सी घाट

भवन स्वामी: श्री दीपक सोपोरी

मो0: 9839241520

आदि शंकराचाय द्वारा भारत के चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की गयो। भारत के पूर्व दिशा में उड़ीसा स्थित पुरी में भगवान जगन्नाथ का विशालतम मंदिर अवस्थित है। काशी में जगन्नाथ मंदिर के प्रतीक स्वरूप अस्सी घाट के निकट भगवान जगन्नाथ का मंदिर अवस्थित है। यहाँ पर श्रद्धालुओं द्वारा जगन्नाथ मंदिर का दर्शन—पूजन किया जाता है। एसी मान्यता है कि यहाँ दर्शन—पूजन से जगन्नाथ के दर्शन का फल प्राप्त होता है।



## द्वारिकाधीश

कोआर्डिनेट :25.29623,82.99335  
लैण्डमार्क: शंकुल धारा पोखरा  
पुजारी: श्री आचार्य रामदास  
मो:9305585047

आदि शंकराचाय द्वारा भारत के चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापना की गयो। भारत के पश्चिम दिशा में गुजरात प्रान्त के द्वारिका में समुद्र तट पर द्वारिकाधीश की स्थापना की गयो। काशी में द्वारिकाधीश मंदिर के प्रतीक स्वरूप संकुल धारा पोखरे पर भगवान् श्री कृष्ण का मंदिर अवस्थित है। यहाँ पर श्रद्धालुओं द्वारा द्वारिकाधीश मंदिर का दर्शन—पूजन किया जाता है। एसी मान्यता है कि यहाँ दर्शन—पूजन से द्वारिकाधीश के दर्शन का फल प्राप्त होता है।

अष्ट  
विनायक

## आर्क विनायक

कोऑर्डिनेट : 25.29070, 83.00651

लैण्डमार्क: तुलसी घाट

पुजारी: श्री विशभर नाथ मिश्र

मो: 9936566228

काशी में श्री गणेश के विनायक स्वरूप के 56 विग्रह स्वीकार किए गए हैं, जिनमें से एक आर्क विनायक है। आर्क विनायक की अवस्थिति लोलार्क कुण्ड के पास तुलसी घाट पर है। रविवार के दिन इनके दर्शन-पूजन का विषेश महत्व है।



## दुर्ग विनायक

कोआर्डिनेट :25.28875,82.99939

लैण्डमार्क: दुर्गाकुण्ड

पुजारी: पं० संजय दूबे

मो० 9616745744

जिला मुख्यालय से दक्षिण—पूर्व में स्थित लगभग 9 किमी की दूरी पर की दूरी पर दुर्गाकुण्ड मन्दिर मे दुर्ग विनायक की स्थिति है। मंदिर का आधार धरातल से लगभग 4 फीट की ऊँचाई पर है। गर्भ गृह में आदमकद दुर्ग विनायक की प्रतिमा उत्तराभिमुख विराजित है। मंदिर में गणेश चतुर्थी बड़े हर्षोल्लास से मनायो जाती है।



## चण्डविनायक

कोआर्डिनेट :25.25109,82.84818

लैण्डमार्क: पंचकोशी परिक्रमा मार्ग  
द्वितीय पड़ाव भीमचण्डी मन्दिर  
परिसर मे ।

पुजारी: पं० बब्लू मिश्रा  
मो०:8009614077

कर्दमेश्वर से लगभग 11 किमी 10 दूर पंचकोशी परिक्रमा मार्ग के द्वितीय पड़ाव  
भीमचण्डी नामक स्थान पर भीमचण्डी देवी के मंदिर में चण्ड विनायक की  
प्रतिमा है। इस विग्रह में विनायक नृत्य मुद्रा में है।



## देहली विनायक

कोऑर्डिनेट :25.21684,82.505908

**लैण्डमार्क:** पंचकोशी परिकमा मार्ग  
द्वितीय पड़ाव भीमचण्डी एवं रामेश्वरम  
मन्दिर के मध्य भठौली ग्राम मे।

**पुजारी:** पं० रंगनाथ दुबे  
**मो०:** 9170120349

देहली विनायक का मंदिर वाराणसी से लगभग 20 किमी0 दूर पंचकोशी  
परिकमा मार्ग पर भीमचण्डी—रामेश्वरम के मध्य भठौली ग्राम में स्थित है।



## उद्दण्ड विनायक

कोऑर्डिनेट : 25.37741,82.85147

**लैण्डमार्क:** पंचकोशी परिक्रमा मार्ग  
द्वितीय पड़ाव भीमचण्डी एवं रामेश्वरम  
मन्दिर के मध्य रामेश्वरम से 1 किमी  
पहले भुईली ग्राम मे।

**पुजारी:**

उद्दण्ड विनायक का मंदिर पंचकोशी परिक्रमा मार्ग के तृतीय पड़ाव  
रामेश्वरम से एक किमी 0 पहले ग्राम भुईली रामेश्वरम में ग्राम मे स्थित है।  
इनके स्वरूप की द्वादश भुजाएँ हैं।



## पाशपाणि विनायक

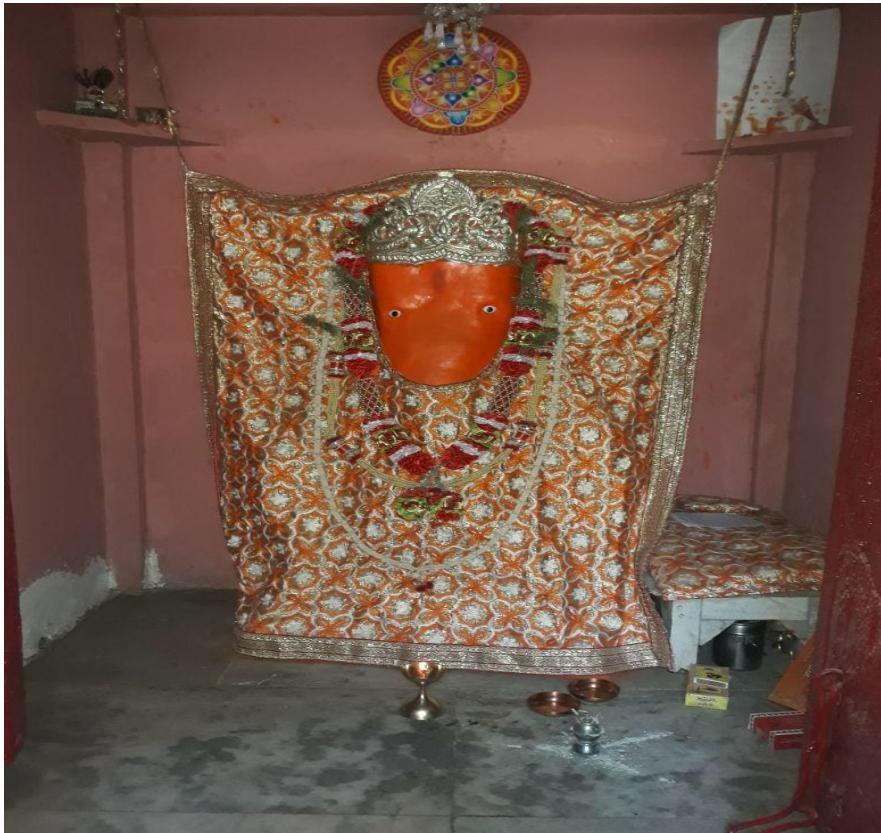
कोऑर्डिनेट :25.33178,82.97517

**लैण्डमार्क:** कैन्टोन्मेन्ट स्थित नेहरु पार्क से 100 मी0 आगे मल्टी परपज लॉन के सामने,कैन्टोन्मेन्ट

**पुजारी:** श्री राकेश चौबे  
मो0 :8808572702

इनका मंदिर जे�0 एच0 वी0 माल कैन्टोन्मेन्ट से 200 मी0 आगे मल्टी परपज लॉन के सामने,कैन्टोन्मेन्ट मे स्थित है। जैसा कि नाम से विदित है ये अपने हाथ में पाश धारण किए हुए है।

## खर्व विनायक



**कोआर्डिनेट :** 25.32947, 83.04256

**लैण्डमार्क:** राजघाट स्थित बसन्ता  
कालेज के बगल में मं0नं0  
ए-37 / 52

**भवन स्वामी:** श्री मनोज उपाध्याय  
मो9026375209

यह मंदिर राजघाट स्थित बसन्ता कालेज के बगल में मं0नं0 ए-37 / 52 में  
स्थित है। खर्व से तात्पर्य बौना है। अतः विनायक यह विग्रह बौने रूप में है।

# सिद्ध विनायक



कोआर्डिनेट :25.31191,83.01456

लैण्डमार्क: मणिकर्णिका कुण्ड के ऊपर सिद्धयों पर।

भवन स्वामी: श्री गोपाल शर्मा  
मो0:

सिद्ध विनायक का मंदिर मणिकर्णिका कुण्ड के ऊपर सिद्धयों पर स्थित है जैसा कि नाम से विदित होता है कि विनायक का यह स्वरूप भक्तों को सिद्धिया प्रदान करने वाला है।

अष्ट प्रधान  
विनायक

# सिद्ध विनायक



कोआर्डिनेट :25.31191,83.01456

लैण्डमार्क: मणिकर्णिका कुण्ड के ऊपर सिद्धयों पर।

भवन स्वामी: श्री गोपाल शर्मा  
मो0:

सिद्ध विनायक का मंदिर मणिकर्णिका कुण्ड के ऊपर सिद्धयों पर स्थित है जैसा कि नाम से विदित होता है कि विनायक का यह स्वरूप भक्तों को सिद्धिया प्रदान करने वाला है।

## त्रिसन्ध्य विनायक



**कोऑर्डिनेट :** 25.31061, 83.01270  
**लैण्डमार्क:** मकान नं० सीके 1 / 40  
लाहौरी टोला ,ललिता घाट ।  
**भवन स्वामी:** श्री रविशंकर गिरि  
**मो०:** 7704049075

विश्वनाथ मंदिर के गेट नं० 2 के सरस्वती फाटक के सामने गली में  
लगभग 300 मी० की दूरी पर मकान नं० सीके 1 / 40 लाहौरी टोला में  
स्थित है।



## आशा विनायक

कोऑर्डिनेट :25.31191,83.01456

लैण्डमार्क: म0 नं0 डी 3/71

वृद्धादित्य के बगल मे मीरघाट

भवन स्वामी:श्री राजेश्वर प्रसाद

उपाध्याय

मो: 7800625384

आशा विनायक का मंदिर म0 नं0 डी 3/71 मीरघाट पर हनुमान मंदिर के पास स्थित है। विनायक के इस स्वरूप के दर्शन से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है।



## क्षिप्र प्रसाधन विनायक

कोआर्डिनेट :25.32186,82.99680

लैण्डमार्क: पिशाचमोचन कुंड के बगल  
में मुख्य सड़क पर

पुजारी:श्री प्रदीप पाण्डेय  
मो:9335336123

विनायक का यह मंदिर पितरकुण्ड तालाब के निकट स्थित है। नाम से विदित होता है कि विनायक के इस स्वरूप का दर्शन—पूजन शीघ्र ही भक्तों की सम्पूर्ण इच्छाओं की पूर्ति करने वाला है।

# ढण्डराज विनायक

कोऑर्डिनेट :25.31087,83.00985

लैण्डमार्क: श्री काशी विश्वनाथ मंदिर  
के मुख्य द्वार -1

पुजारी:श्री रामेश्वर पुरी  
मो:9451722773



वाराणसी में इनका स्थान श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य  
द्वार -1 पर है।



## वकतुण्ड विनायक

कोऑर्डिनेट :25.31972,83.01155

लैण्डमार्क: मैदागिन चौराहे के पास  
बड़ा गणेश मुहल्ले में

पुजारी: पं० कैलाश दुबे  
मो०:०५४२—२४३५१४०

जिला मुख्यालय वाराणसी से पूरब दिशा में लगभग 10 किमी० रेलवे स्टेशन से लगभग 5 किमी० की दूरी पर लोहटिया नामक स्थान पर यह मंदिर अवस्थित है। मंदिर में गणेश जी की मूर्ति पूर्वमुखी है। मुख्य पर्व गणेश चतुर्थी के अवसर पर मंदिर को खूब सजाया जाता है। गणेश उत्सव भी पूरे हर्षउल्लास के साथ मनाया जाता है। इन्हे महाराज विनायक(बड़ा गणेश) के नाम से भी जाना जाता है।